संस्मरण

देश की राजधानी दिल्ली की बात है, यू तो न जा ने कितनी बार यहाँ की सड़को, गलियों और बस्तियों से मैं गुजरी हूँ पर इन्हें देखने का एक नया आयाम **ऊर्जा** ने दिया है - उनके बीच रहने, उन्हें समझने और अपनाने का | आज जब मै लोगों की भीड़ से घिरी थी तभी मेरी नज़र एक ऐसी बच्ची पर पड़ी जिसकी गोद में एक छोटा सा बच्चा था , सवाल यह नहीं था कि उसकी गोद में बच्चा था, बात तो ये थी कि वह बच्ची स्वयं कितनी बड़ी थी? शायद आठ या नौ साल की | मैंने उससे पूछा बेटा किस क्लास मे पढ़ती हो ? वह संकुचाकर कुछ नहीं बोल पाई, तभी उसकी माँ ने कहा "मैडम" ये अगर स्कूल जाएगी तो घर का काम और छोटे भाई बहनों को कौन देखेगा, हम तो काम पर सुबह चले जाते है और शाम को वापस आते है | यह बात कही न कही हम सबके मन में गूंजती रही कि क्या इस बच्ची को पढ़ने का कोई हक़ नहीं है? क्या इसकी पीड़ा की अभिव्यक्ति मौन रहेगी ?

कही न कही इस तरह की मर्मस्पर्शी वेदनाओ ने **ऊर्जा** नामक संस्था की नीव रखी | और ऐसे न जाने कितने संस्मरण है, जिसने हमें झकझोर के रख दिया कि जिस भारत का अतीत इतना गौरवशाली रहा है, क्या उसका वर्तमान बिना शिक्षा के अपने स्वर्णिम इतिहास को कैसे जान पाएगा? क्या अपने भविष्य को मजबूत व सुरक्षित कर पाएगा? अब समय आ गया है कि समाज के इस वर्ग मे शिक्षा का प्रचार प्रसार कर उनको स्वावलंबी बनाया जाये । इस उदेश्य को ध्यान मे रखते हुए ऊर्जा ने अपना एक अध्यन केन्द्र स्थापित किया ताकि आने वाली पीढ़ी एक सम्मान व जिम्मेदार नागरिक की तरह साँस ले सके|